VOLUME- 1 ISSU -1 16 February 2026
Dikshaurjit International Interdisciplinary Online Research Journal, Latur (DIIRJL)
Add.:Khadgaon Rd,Sambhaji Nagar,Near Smt.SushiladeviDeshmukh Senior College, LaturLatur, Maharashtra 413512, India.
Phone:9890408998, 8329647660Email ID: diirjournal@gmail.comWebsite:https://www.diirjournal.com

प्रा. विजय राव
ए. व्ही. पाटील कला, विज्ञान व वाणिज्य महाविद्यालय, गुलबर्गा

हिंदी साहित्य में दलित विमर्श : एक आलोचनात्मक अध्ययन

सारांश

हिंदी साहित्य में दलित विमर्श सामाजिक न्याय, समानता और मानवीय गरिमा की स्थापना का सशक्त माध्यम रहा है। दलित साहित्य ने शोषित, वंचित और हाशिए पर खड़े समाज की पीड़ा, संघर्ष और चेतना को अभिव्यक्ति दी है। प्रस्तुत शोध पत्र में दलित विमर्श की अवधारणा, उसका ऐतिहासिक विकास, प्रमुख दलित साहित्यकारों का योगदान तथा हिंदी साहित्य में दलित चेतना की भूमिका का अध्ययन किया गया है। यह शोध स्पष्ट करता है कि दलित विमर्श केवल साहित्यिक आंदोलन नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया है।

प्रस्तावना

हिंदी साहित्य में लंबे समय तक मुख्यधारा का साहित्य उच्चवर्णीय दृष्टिकोण से लिखा जाता रहा। दलित समाज की पीड़ा, अपमान और संघर्ष को साहित्य में अपेक्षित स्थान नहीं मिला। २०वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में जब दलित चेतना का विकास हुआ, तब साहित्य में दलित विमर्श एक सशक्त विचारधारा के रूप में उभरा। यह विमर्श सामाजिक समानता, मानवाधिकार और आत्मसम्मान की मांग करता है।

समस्या का कथन

हिंदी साहित्य में दलित विमर्श का स्वरूप एवं उसका सामाजिक महत्व है।

अध्ययन के उद्देश्य

दलित विमर्श की अवधारणा को स्पष्ट करना

हिंदी साहित्य में दलित विमर्श के विकास का अध्ययन करना

प्रमुख दलित साहित्यकारों के योगदान का विश्लेषण करना

दलित साहित्य के सामाजिक प्रभाव को समझना

अनुसंधान पद्धति

प्रस्तुत शोध में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है।

इसके अंतर्गत:

दलित साहित्य से संबंधित पुस्तकों का अध्ययन

शोध पत्रों एवं आलोचनात्मक लेखों का विश्लेषण

आत्मकथाओं, कहानियों, कविताओं एवं उपन्यासों का संदर्भ

दलित विमर्श की अवधारणा

दलित शब्द का अर्थ है दबाया हुआ, शोषित एवं उपेक्षित वर्ग।

दलित विमर्श वह साहित्यिक चेतना है जो दलित समाज के जीवन, संघर्ष, पीड़ा और प्रतिरोध को अभिव्यक्त करती है। यह विमर्श समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व के सिद्धांतों पर आधारित है।

हिंदी साहित्य में दलित विमर्श का विकास

स्वतंत्रता के बाद सामाजिक परिवर्तन के साथ-साथ दलित चेतना को बल मिला।डॉ. भीमराव अंबेडकर के विचारों से प्रेरित होकर दलित साहित्य ने सामाजिक अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाई। १९७० के बाद हिंदी साहित्य में दलित लेखन सशक्त रूप में सामने आया। उच्चवर्णीय दृष्टिकोण से लिखा जाता रहा। दलित समाज की पीड़ा, अपमान और संघर्ष को साहित्य में अपेक्षित स्थान नहीं मिला। २०वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में जब दलित चेतना का विकास हुआ, तब साहित्य में दलित विमर्श एक सशक्त विचारधारा के रूप में उभरा। यह विमर्श सामाजिक समानता, मानवाधिकार और आत्मसम्मान की मांग करता है।

प्रमुख दलित साहित्यकार एवं उनका योगदान

१. डॉ. भीमराव अंबेडकर

डॉ. अंबेडकर के विचार दलित साहित्य की वैचारिक नींव हैं। उन्होंने समानता, शिक्षा और आत्मसम्मान पर बल दिया।

२. ओमप्रकाश वाल्मीकि

उनकी आत्मकथा जूठन दलित जीवन की यथार्थ पीड़ा को सशक्त रूप से प्रस्तुत करती है।

३. मोहनदास नैमिशराय

इनकी रचनाएँ दलित संघर्ष और सामाजिक अन्याय को उजागर करती हैं।

४. कंवल भारती

इन्होंने दलित साहित्य को वैचारिक दिशा प्रदान की और आलोचना के माध्यम से उसे सशक्त बनाया।

दलित साहित्य की प्रमुख विधाएँ

१. आत्मकथा

दलित आत्मकथाएँ यथार्थ अनुभवों पर आधारित होती हैं, जो पीड़ा और संघर्ष को सीधे प्रस्तुत करती हैं।

२. कहानी

दलित कहानियाँ सामाजिक भेदभाव, जातिवाद और शोषण के विरुद्ध प्रतिरोध की आवाज हैं।

३. कविता

दलित कविता में आक्रोश, चेतना और आत्मसम्मान की भावना प्रबल होती है।

दलित विमर्श का सामाजिक महत्व

सामाजिक समानता की स्थापना

जातिगत भेदभाव के विरुद्ध संघर्ष

वंचित वर्ग को अभिव्यक्ति का मंच

मानवाधिकारों की चेतना का विकास

आलोचनात्मक दृष्टि से दलित विमर्श

कुछ आलोचक दलित साहित्य को केवल अनुभव आधारित मानते हैं, परंतु वास्तव में यह साहित्य सामाजिक यथार्थ का दस्तावेज है। दलित विमर्श ने हिंदी साहित्य को नई दृष्टि और नई संवेदना प्रदान की है।

निष्कर्ष

हिंदी साहित्य में दलित विमर्श ने सामाजिक चेतना को जागृत किया है। यह साहित्य शोषण के विरुद्ध प्रतिरोध का स्वर है और सामाजिक परिवर्तन का सशक्त माध्यम है। दलित विमर्श ने साहित्य को मानवतावादी दृष्टिकोण प्रदान किया और समानता की विचारधारा को मजबूती दी।

संदर्भ

वाल्मीकि, ओमप्रकाश जूठन, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

नैमिशराय, मोहनदास दलित साहित्य का इतिहास, वाणी प्रकाशन

भारती, कंवल दलित विमर्श और हिंदी साहित्य, राधाकृष्ण प्रकाशन

Dikshaurjit International Interdisciplinary Research Journal, Maharashtra Latur
www.diirjournal.com
diirjournal@gmail.com